9 Q2. समाज तथा समाजीकरण में लिंग की भूमिका।

MAY '07

Ans:- जाति - प्रत्येक जाति के माध्यम से ही समाज में लिंग भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं जैसे - ब्राह्मण जाति में पुरोहितों का कार्य पुरुष करते हैं, महिलाएँ नहीं। शूद्र जाति में सफाई का कार्य स्त्री एवं पुरुष दोनों ही जातियाँ करती हैं। समाज में व्यापार में वैश्य पुरुष ही अधिक संलग्न देखे जाते हैं। प्राचीनकाल से युद्ध कला में पुरुषों को ही युद्ध पर भेजा जाता रहा है। जो कुछ अपवाद हैं वे इसी कारण चर्चा के पात्र हैं जो देश की आधी आबादी में अधिकांश रूप से अपने व्यावसायिक कार्यों में परम्परागत रूप से बेटे को ही महत्व देती आयी हैं। समाज में पुरुष का बेटा लुहार तथा पुरोहित का

10 THU

बेटा पुरोहित बनता ऐसा रहा है। परम्परागत व्यवसाय परिवार में पुत्रों को हस्तान्तरित किये जाते हैं, पुत्रियों को नहीं। सभी जातियों में महिलाओं को घर की चारदीवारी के अन्दर तक सीमित रखने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा प्रदान करने में भी सभी जातियों में दोनों लिंगों में भेदभाव किया जाता है। सभी जातियाँ तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने में पुत्रों को वरीयता प्रदान की जाती है।

APR '07

क्योंकि वे बेटों को अपना मानती है और लड़कियों को पराया धन जिसे दूसरे को दान देकर पुण्य कमाया जाता है।

परम्परागत रूप से पुरुषों को सभी जातियों में आर्थिक शक्ति सम्पन्न समझा जाता है तथा महिला को शक्तिहीन। शक्ति-सम्पन्नता के कारण ही पुरुषों को धनोपार्जन करके परिवार की जिम्मेदारी वहन करने का कार्य सौंपा गया तथा उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे एक मुखिया माना गया तथा कर्ता-धर्ता, सुरक्षा प्रदान करने तथा भूमिका पुरुषों के लिए रखी गयी है। उन्हें घर का मुखिया माना गया।

अ) धनोपार्जन करना।

ब) सभी पारिवारिक सदस्यों की आवश्यकताओं (खान-पान, वस्त्र, मकान, शिक्षा) की पूर्ति।

स) घर चलाने की जिम्मेदारी सभी जातियों में परिवार एवं समाज द्वारा पुरुषों को दी गयी है। वही पुरुष को दी गयी है। वही पुरुष योग्य माना जाता है। जो अधिक से अधिक सुख सुविधा अपने परिवार को प्रदान करता है। और पुरुष की यह भूमिका सभी जातियों में है।

SUNDAY 13

2. धर्म (Religion) :- प्रत्येक धर्म में भी लिंग के आधार पर भूमिकायें निर्धारित होती हैं। धर्म चाहे कोई भी हो सभी धर्मों में महिला लिंग को द्वितीय दर्जे का स्तर प्राप्त है। हिन्दू धर्म में समाज में महिलाओं को पति की सम्पत्ति पर अधिकार प्रदान किया जाता है। क्योंकि पुरुष को एक विवाह का अधिकार दिया गया है। यह अलग बात है कि पुरुष दहेज प्राप्ति के लिए इस क्षेत्र में कितनी धोखाधड़ी कर रहे हैं। मुस्लिम धर्म में तो स्थिति और भी खराब है। यहाँ न स्त्रीलिंग को पर्याप्त शिक्षा कराई जाती है और न ही सम्पत्ति से ही उन्हें कुछ अर्जित किया जाता है। विवाह एक समझौता होने के कारण उसे कभी भी तोड़ा जा सकता है। मुस्लिम पुरुष एक साथ एक से अधिक विवाह कर सकते हैं। और उन्हें अपनी पहली पत्नि से इजाजत लेनी पड़ती है। की आवश्यकता नहीं है। दूसरी ओर एक महिला को इस वैवाहिक समझौते को तोड़ने की इजाजत नहीं है। उसे उसके लिए पति की याचना करनी पड़ती है। आर्थिक शक्ति पति के आस-पास घूमती है। महिला इस चक्रव्यूह में फसकर रह जाती

Scanned by PDF Scanner

बद्तर स्थिति मे पहुँच जाती है। बाल-विवाह के कारण उनका स्वास्थ्य भी कम उम्र मे खराब हो जाता है। साथ ही पुत्री को जन्म देने का दबाव उन्हे सदैव झेलना पड़ता है। पारिवारिक चक्रव्यूह मे कम आय भी संग्लनी तथा अधूरी अव्यावसायिक शिक्षा-दीक्षा के कारण विपरीत परिस्थितियों मे वे अपना जीवन-यापन करने मे सक्षम नही होती है। ईसाई धर्म मे लिंग के आधार पर भेदभाव कम पाया जाता है। स्त्री लिंग को भी यथोचित शिक्षा प्राप्त होती है। तथा वैवाहिक सम्बन्ध भी वे स्वयं ही चुन पाते है तथा उनके बच्चों की संख्या कम हो जाती है। ईसाइयों की हमारे समाज में बहुत कम संख्या है। उनमे बहुत अधिक भेदभाव नहीं देखा जाता है। सिख धर्म में भी हिन्दुओं के समान ही महिलाओं की स्थिति पायी जाती है। पुरुष आर्थिक शक्ति माने जाते है। सिखो मे बहुत से विदेशों मे कार्यरत पुरुष दहेज के लोभ में भारतीय लड़कियों से विवाह कर सकते है। और वहाँ भी वे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लेते है। इस प्रकार वे धोखाधड़ी करते हैं। पंजाब में हजारों की संख्या में ऐसी महिलाए है जिनको विवाह के बाद भी उनके पति अपने साथ विदेश नहीं ले गये और न ही वर्षों से आये हुए है। इस प्रकार लिंग के आधार पर उनसे भेदभाव किया जाता है।

Scanned by PDF Scanner

धर्म चाहे कोई भी हो, समाज में स्त्रियों की भूमिका घर तक मानी जाती है और उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर करने से पूर्व ही उन पर लगा दिये जाते हैं। जैसे अपने शहर के बाहर नौकरी नहीं करना है, रात की जॉब नहीं करनी है, घर पर भी कोई काम कर लो, अभी नौकरी छोड़ दो, रात की जॉब नहीं नहीं करनी है, घर पर ही कोई काम कर लो, अभी नौकरी छोड़ दो, बाद में कर लेना आदि। इन सभी स्थितियों का कारण यह है कि समाज में महिला को घरेलू भूमिका में ही देखा जाना पसन्द करते हैं। घरेलू में भी देखा जाना पसन्द करते हैं। घर में भी महिलाओं के लिए सर्वप्रथम घरेलू कार्यों को करने का प्रयास किया जाता है। इस कारण ऐसे अनेक अवसर आते हैं। जब उन्हें अपने व्यवसाय अथवा नौकरी पर घर की तथा घरेलू दायित्वों को अधिक प्राथमिकता देनी होती है सभी धर्मों में पुरुष को घर का सर्वेसर्वा तथा मुखिया माना जाता है और महिला की द्वितीय दर्जे की स्थिति ही रही है। परिस्थितियाँ तब अधिक खराब हो जाती हैं, जब ससुराल में उन्हें पराया समझा जाता है। और बात-बात में घर से निकाल देने की धमकी दी जाती है वहाँ महिलाओं तथा बच्चों की स्थिति और भी अधिक खराब हो जाती है।